XXXXXX XXXXXXX XXXXXXXXXXXX

XXXXXX XXXXXXX XXXXXXXXXXXX

महाराजा कृष्ण षोडश कलाओं को जानने वाले थे। मानव के हृदय में पाँच प्राण होते हैं पाँच कर्म इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ और एक मन यह सब सोलह कला होती हैं। योगश्वर कृष्ण ने इन सबके विषय को जाना और मन को स्थिर करके उन रत्नों की खोज की जो परमात्मा ने, सृष्टि के प्रारम्भ में, समुद्र मन्थन करके महान् विकास कर दिया। प्रश्न आता है कि वे रत्न थे या न थे। यदि नहीं थे तो कहाँ से आए? तो इससे प्रतीत होता है कि जब परमात्मा इस शून्य प्रकृति को अपनी प्राण रूपी सत्ता देता है तो यह महान् चमकने लगती है। यह अपना प्रकाश देने लगती है। उस समय धीरे–धीरे यह संसार रच जाता है। परमात्मा ने अपना महत् देकर चौदह रत्न इस पृथ्वी से निकाले। यह है परमात्मा का मन्थन। समुद्र कहते हैं प्रकृति को जिसका कोई पार नहीं। यह मन्थन किसके लिए किया जैसे माता का बालक है। गौ दूध देती है, माता दुग्ध की क्रिया बनाती है। क्रिया बना करके उस दुग्ध का मन्थन करके उसमें से घृत निकाल लेती है। वह माता किसके लिए घृत निकाल लेती है? वह जो उसका परिवार उसके द्वारा है। वह उस घृत को अपने बालक को अर्पण कर देती है ऐसे ही परमात्मा इस महान् प्रकृति का मन्थन अपने बालक आत्मा के लिए करता है।

सब महान् प्रकृति से आए हैं जैसे सूर्य है, चन्द्रमा है, कामधेनु है, अग्नि है, वरूण है यह सब प्रकृति के मन्थन से आए हैं। धेनु माता को भी कहते हैं, धेनु गौ को भी कहते हैं। हम पृथ्वी को गौ कहा करते हैं। परमात्मा ने इसका मन्थन करके स्थिर किया। श्यामकर्ण मन को भी कहते हैं, श्यामकर्ण अग्नि को भी कहते हैं। यहाँ कई रूपरेखा मानी गई हैं। श्यामकर्ण सूर्य को भी कहते हैं। परमात्मा ने इन सबको निकाला। माता धेनु को उत्पन्न किया जिससे संसार की उत्पत्ति होती है। परमात्मा ने चौदह रत्नो ं को निकाला परन्तु परमात्मा ने जब इतने विशाल समुद्र को हमारे लिए मन्थन किया है तो आज हमारा कर्त्तव्य है कि हम परमात्मा के मन्थन किए हुए संसार रूपी समुद्र से पार हो जायें और पार होकर परमात्मा की गोद में चले जाये ं यह हमारा कर्त्तव्य है। अहा! हमारा क्या आदेश चल रहा था। मुनिवरो! आज तो हम तुम्हें एक सूक्ष्म सी वार्ता उच्चारण कर देवें जैसा महानन्द जी का आदेश था।

(महानन्द) 'कृपा कीजिए भगवन्।'

मुनिवरो! आज हमारा कर्मो के सम्बन्ध में व्याख्यान चल रहा था। बहुत ही विशाल व्याख्यान दे रहे थे। आज हम तुम्हें यह वार्त्ता उच्चारण कर देवें जो कार्य किसी काल में हुआ परन्तु उसकी रूपरेखा पश्चात् में निर्णय देंगे।

सतोयुग के काल का समय था। हमारे गुरु ब्रह्मा वेद के प्रकाण्ड पण्डित और विद्या के भण्डार थे। उनका महान् शिष्य मण्डल भी था, उनके एक पुत्र महा सृष्टु मुनि महाराज थे। एक समय महा सृष्टु मुनि महाराज अपनी तुम्बा नाम की धर्मपत्नी के साथ एक स्थान पर विराजमान थे। उन दोनों के हृदय में एक भावना उत्पन्न हुई कि हमारे कोई पुत्र होना चाहिए, परन्तु पुत्र तेजस्वी हो। उनके पिता ब्रह्मा ने कहा है कि तुम दोनों को जितने समय की अवधि दी है, ब्रह्मचर्य का पालन करो और तपस्या करो। दोनों एकान्त स्थान में वेदों को विचारते रहते थे। उन्होंने अपने पिता को कण्ठ किया। उनके पिता ब्रह्मा उनके समक्ष आ पहु ँचे। उस समय दोनों ने निवेदन किया ''महाराज अब हम एक पुत्र चाहते हैं'' उस समय उन्होंने आज्ञा दी कि तुम अवश्य पुत्र उत्पन्न करो।

उस समय हमने सुना है कि उनके आदेशनुकूल महा–सृष्टु मुनि महाराज ने यज्ञ किया, वेदों का स्वाध्याय किया और उसी के अनुकूल गर्भस्थल की स्थापना की।

आगे यह संसार चलता रहा। कुछ समय के पश्चात् तुम्बा नाम की धर्मपत्नी से पुत्र उत्पन्न हुआ। उस बालक का जन्म–संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया, सृष्टु मुनि महाराज ने अपने बालक का नाम कुत्री मुनि नियुक्त कर दिया। बाल्यकाल से ही पति और पत्नी दोनों उसे इतने ऊँचे वातावरण में शिक्षा दिया करते थे कि वह वेदो ं का प्रकाण्ड विद्वान बन गया। जब वह 25 वर्ष काआदित्य ब्रह्मचरी बन गया, उस समय उसने अपने माता–पिता से निवेदन किया कि मुझे आज्ञा दो, मेरी इच्छा है कि मैं इस समय परमपिता परमात्मा की उपासना करना चाहता हूँ जिससे मेरे जीवन का विकास हो। मै ं उस आध्यात्मिक विज्ञान को खोजना चाहता हूँ जिसको हमारे गुरु ब्रह्मा आदि सब आचार्य खोजते चले आए हैं।

जब उनके माता–पिता ने उसके अन्तः करण की यह वार्त्ता सुनी तो वह प्रसन्न हो गए और प्रसन्न हो करके आज्ञा दी, '' तुम्हें धन्य है। हमारे कैसे सौभाग्य है जो ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ जो अपनी मृत्यु को विजय पाने की सोच रहा है। पुत्र! जैसी तुम्हारी इच्छा है वैसा कार्य करो और उसके अनुकूल अपने जीवन को ऊँचा बनाओ।''

उस समय वह बालक माता–पिता की आज्ञा पा करके वह करुड़ मुनि महाराज के समक्ष जा पहुँचे। करुड़ मुनि महाराज ने उनका बड़ा ऊँचा सत्कार किया और कहा, आनन्द में हो ब्रह्मचारी जी। उसे कहा, महाराज आनन्द से हैं ''क्या तुम्हारे पिता भी आनन्द हैं।'' उसे कहा, विशेष आनन्द है। जब सब आनन्दपूर्वक वार्ता कह सुनाई तब बालक वहाँ से अगले स्थान पर जा पहु ँचे जहाँ महर्षि सुदक्षमुनि महाराज, तत्वकेतु मुनि महाराज और अमरोती मुनि महाराज विराजमान थे। ऋषियों के मध्य में जाकर उनके चरणों को स्पर्श किया और स्पर्श करते हुए आनन्द पूर्वक वार्ता उच्चारण की। ऋषियों ने भी जान लिया कि यह तो सृष्टु मुनि महाराज का बालक है, ब्रह्मचारी है और ऋषि बनने के लिए जा रहा है।

मुनिवरो! वहाँ से आज्ञा लेकर अगले स्थान पर जा पहु ँचे जहाँ कार्तिक मुनि महाराज रहा करते थे। जहाँ अम्बेतु ऋषि, अकेतु मुनि महाराज, अंगिरा आदि आचार्य वहाँ विराजमान थे। अकेतु मुनि महाराज ने उनका बड़ा ऊँचा सत्कार किया। वह काल कितना ऊँचा था जिस समय बुद्धि मानों का इतना सत्कार होता था। बुद्धिमान होने के नाते जिस ऋषि के स्थान पर जाते थे, ऋषि उनका ऊँचा सत्कार किया करते थे। वहाँ से आज्ञा लेकर अगले स्थान पर जहाँ, कपिल मुनि महाराज, मधेतु महाराज, गंगकेतु ऋषि, प्राची मुनि महाराज और द्रुगनी और क्रणवन्ती ऋषि महाराज और भी आदि–आदि ऋषि विराजमान थे। लोमश मुनि भी विराजमान थे। दार्शनिक विषय हो रहा था। उस दार्शनिक समाज में जाकर उन्होंने सबको नमस्कार किया। आनन्दपूर्वक सबने उनका सत्कार किया। महर्षि लोमश ने कहा, ''कहिए भगवन्! आप कहाँ से विराज रहे है।'' उस समय उन्होंने कहा, ''मै ं तो भगवन्! आप ऋषियों के दर्शन करने के लिए आ रहा हूँ। दर्शन कर आनन्दित हो जाऊंगा।'' तब लोमश मुनि ने कहा, ''अरे तुम कहाँ जा रहे हो? यहाँ तो दार्शनिक विषय हो रहा है। यह तो बड़ा गूढ़ विषय है।'' वह दार्शनिक समाज में विराजमान हो गए। नारद मुनि महाराज भी वहाँ थे।

उस समय दार्शनिक समाज में यह निर्णय किया जा रहा था कि जब एक कल्प समाप्त हो जाता है उसके पश्चात् ब्रह्मा का एक दिवस माना जाता है। यह इस प्रकार क्यों है? ब्रह्मा किस पदार्थ का नााम है। ब्रह्मा कोई मानव है या ब्रह्मा कोई बुद्धिमान है या ब्रह्मा परमात्मा को कहते हैं। लोमश मुनि ने निर्णय कि वह जो ब्रह्मा का दिवस है, वह ब्रह्मा की आयु है वह सौ कल्प के पश्चत् मानी गई है। ब्रह्मा की जितनी आयु है इतनी आयु तक यह परमात्मा के गर्भ में आनन्द लेता रहता है। इसका विषय तो कल उच्चारण करेंगे आज समय नहीं।

देखो! यह ऋषि बालक उस दार्शनिक समाज से आज्ञा पा रके बहते भये, शौनक ऋषि महाराज के समक्ष आ पहु ँचे। शौनक मुनि ने उस ऋषि बालक का बड़ा ऊँचा सत्कार किया। तो जब तक उस ऋषि बालक के हृदय में कोई प्रेरणा न हुई, तो वह बहते रहे और अन्त में सोमभाव ऋषि के द्वार जा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर प्रेरणा हुई कि जिस मन्तव्य के लिए मैं भ्रमण कर रहा हूँ अभी तक पूर्ण नहीं हुआ। मुझे ज्ञात ही नहीं रहा, मुझे तो कोई गुरु धारण करना चाहिए, गुरु बना करके अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। उस समय देखो शम्भु मुनि महाराज से कहा, महाराज! आप मार्ग में रहते है। आपका बड़ा ऊँचा स्थान है। यहाँ कोई ऐसा ऋषि है जो गुरु योग्य है? जो हमें ऊँचा मार्ग दिखा देवे। उस समय उन्होंने कहा, ''ऐसा ऋषि तो है परन्तु हमें तो ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसा आप जिज्ञासु नहीं हैं।'' उस समय बालक ने कहा महाराज! मैं तो बड़ा जिज्ञासु हूँ। आप मुझे निर्णय तो करें। उन्होंने कहा, ''यहाँ से चले जाओ। देखो, ब्रह्मा के शिष्य रहते हैं जिनको श्रृगीं ऋषि कहते हैं उनके स्थान पर चले जाओ। वह तुम्हारा सत्कार करेंगे और वह तुम्हें ऊंचा पंहुचा देंगें। उस समय ऋषि बालक ने कहा कि उनमें क्या विशेषता है? वह इस योग्य क्यों हैं? उस समय कहा, ''हमने तो ऐसा सुना है कि आज 84 वर्ष हो गए हैं उन्होंने मिथ्या उच्चारण नहीं किया है सत्यवादी हैं। द्वितीय वाक्य यह है कि उन्होंने अपनी आत्मा का परमात्मा से मेल करा दिया है। वह गुरु के योग्य हैं उन्हें गुरु क्यों नहीं बनाते?''

यह वार्त्ता उस बालक के आंगन में आ गई। वह वहाँ से बहता हुआ इस आत्मा के समक्ष जा पहुँचा। उसका बड़ा ऊँचा सत्कार हुआ, उपहार में बड़े पदार्थ दिए। वह ब्रह्मचारी था, ब्रह्मचारी का सत्कार करना प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है। उनका सत्कार किया। सत्कार के पश्चात् वह बालक प्रसन्न हो गया और मन में उन्हें गुरु चुन लिया। इस आत्मा ने भी गुरु के नाते उस बालक को शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। शिक्षा देने लगे, योगाभ्यास की निधि पर निधि देने लगे। यह तो न मानव का कैसा तुच्छ समय आ करके मानव को नष्ट–भ्रष्ट कर देता है। उस समय वह बालक किसी कार्य में अधूरा था। बालक ने कहा, हे भगवन्! अब मुझे आज्ञा दीजिए, मैं तपस्या करने के लिए तत्पर हो रहा हूँ। मैंने बहुत योगाभ्यास किया है आज मैं उस महानता को पाना चाहता हूँ जिस महानता से हमारे आदि ऋषियों ने महान् विज्ञान को पाया है आज मैं वहीं जाना चाहता हूँ। उस समय देखो इस आत्मा ने कहा, ''अरे बालक! अभी तू इस योग्य नहीं हुआ है जो तू इतनी पूर्ण निधि पर पहुँच जाएगा।''

उस समय बेटा वह गुरु की आज्ञा को नष्ट करके बहते भये। कजली वन में जा करके समाधि में लय हो गए। योगाभ्यास के नाते केवल आयु के अधीन न रहकर ऐसा सुना है कि उन्होंने 250 वर्ष की समाधि की। बेटा गणना के अनुकूल वह 250 वर्ष की समाधि के पश्चात् भी तपस्या करता हर। करते–करते उसे 250 वर्ष से भी कुछ अधिक वर्ष हो गए। जब अधिक वर्ष हो चुके तो मुनिवरो! यहाँ यह निधि मानी जाती है। जब योग में महान् इस प्रकार आरूढ़ हो जाता है उस समय समाधि जाग्रत करने के लिए ऋषिवर नियुक्त रहते हैं। वहाँ देखो आदि गुरु ब्रह्मा ने अपने पुत्र सृष्टु मुनि महाराज को नियुक्त किया कि जाओ वह बालक अपनी तपस्या में आरूढ़ हो रहा है। उन्होंने अपने योगबल से उस बालक की तपस्या को जाना। उसके अन्तःकरण में वह जाग्रत थी उसके योग की स्थिति शुद्ध हो गई। उस समय क्या करें उस बालक को अभिमान हो गया कि मैंने सभी पदार्थों को विजय कर लिया। वह वहाँ से बहते हुए संकेतु ऋषि महाराज के समक्ष पहुँचे। संकेतु ऋषि ने कहा 'कहिए आपकी तपस्या में क्या सफलता हुई? आपने तो बड़ा ही योगरूढ़ किया है।' उस समय उन्होंने कहा 'देखो मेरे गुरु ने तो ऐसा कहा था कि तू पूर्ण निधि पर पहुँचने के योग्य नहीं परन्तु मुझे तो आज प्रतीत होता है जैसे मैंने अपने गुरु ब्रह्मा के पद को और अपने गुरु के पद को क्या मैंने तो तीनों लोकों को विजय कर लिया है।' उस समय जब बालक को यह अभिमान हो गया तो अन्य ऋषियों के समक्ष पहुँचे। सृष्टु मुनि के समक्ष पहुँचे। सृष्टु मुनि ने कहा अरे बालक क्या रहा तुम्हारी तपस्या में? मुनिवरो! उस समय उसने पिता को पिता न जानकर अभिमान में कहा, हे पिता तूने क्या तपस्या की है आज जो मैंने की है। आज मैंने तीनों लोकों को विजय कर लिया है, तीनों लोकों का स्वामी बन चुका।

तो मुनिवरो! जब बालक को यह अभिमान छा गया।

आगे चलते गए। आदि–आदि ऋषियों से सम्बन्ध किया और सभी ऋषियों से यह अहंकारदायक वाक्य कहा और उन्हें ठुकरा देता था। मुनिवरो! वह इतना महान् तुच्छ बन गया कि उसका किया हुआ परिश्रम सब समाप्त हो गया। अन्त में बहते हुए वह विभाण्डक ऋषि के द्वार जा पहुँचे। उनसे भी वही अहंकारदायक वाक्य कहे। उस समय विभाण्डक ऋषि ने कहा 'अरे तुम्हारे गुरु कौन हैं?'

उन्होंने कहा 'मेरे गुरु श्रृंगी ऋषि हैं। मुझे उनकी शिक्षा है।' उस समय कहा अरे तुम्हारे गुरु तो बड़े ब्राह्मण हैं वह तो सत्यवादी हैं उनसे यह अहंकारमय वाक्य उच्चारण न कर देना। यदि तुमने उच्चारण किया तो हमें प्रतीत है जैसे हो, तुम्हें मृत्यु दण्ड प्राप्त हो जाएगा।' उस समय उस बालक ने कहा 'अरे नहीं! क्या उच्चारण कर रहे हो?' उन्हें अपने पदों से ठुकराने लगे।

अन्त में मुनिवरो! यह स्वयं ब्रह्मणे आत्मा के समक्ष आ पहुँचे। उन्होंने प्रश्न किया 'अरे कहो बालक! तुम्हारी तपस्या में क्या प्रबलता हुई।' उसने उत्तर दिया कि मैंने तो तीनों लोकों को विजय कर लिया है। अन्तरिक्ष, द्यौ लोक, मृत लोक और अपने गुरु पद को प्राप्त कर लिया है। आप तो यह कहते थे कि क्या तपस्या कर पाओगे।

भगवन्! मैंने तीनों लोकों को विजय कर लिया है। 'अच्छा' क्या करें जब पता न कौन–कौन से कर्मों का जब भोग आता है तो मानव की बुद्धि उसी प्रकार की हो जाती है। उस बालक की यह भावना पाकर और योग द्वारा उसके अन्तःकरण को जान करके कि उसकी मृत्यु निकट आ गई है उसी के अनुकूल उन्होंने अपने मुखारविन्द से यह कहा कि अरे तुच्छ, ऋषि के बालक! तुझे इतना बड़ा अभिमान, जा मृत्यु को प्राप्त हो जा।

उस समय वह बालक मृत्यु को प्राप्त हो गया। तुम यह प्रश्न करोगे कि क्या परमात्मा के नियम के प्रतिकूल मृत्युदण्ड मिल जाता है? इसका उत्तर यह है कि जब समय आ जाता है तो समय के अनुकूल ही ऐसा वाक्य कहा जाता है।

जब मृत्युदण्ड प्राप्त हो गया तो त्राहिमाम–त्राहिमाम मच गई। ऋषियों में हाहाकार मच गया। अरे यह क्या हुआ ऋषि का बालक, ऐसा तपस्वी मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय ब्रह्मा, आचार्य ऋषि–मण्डल को ले करके क्रोध में छाये हुए वहाँ जा पहु ँचे और कहा, ''अरे तुच्छ बालक! तूने एक ऋषि के बालक को नष्ट कर दिया। जब तुम इतने बुद्धिमान थे तो तुमने उसको यथार्थ शिक्षा क्यों न दी? शिक्षा देकर उसको ऊंचे मार्ग पर चलाते, परन्तु तुमने मृत्यु का दण्ड दे दिया। आज तुम्हें भी इन कर्मों का फल भोगना पड़ेगा। जन्म–जन्मान्तरों की वार्ता तो यह है कि तुम सूक्ष्म शरीर द्वारा, जैसे और भी लोक हैं, उन सबमें जन्म पाते हुए सतोयुग, त्रेता और द्वापर सब ही काल को देखो परन्तु जिसब्तमंजमक इल ैज्ञज समय कलियुग के 5500 वर्ष व्यतीत हो जाएंगे, उस समय तुम्हारा एक अज्ञान गृह में जन्म होगा। वह तुच्छ जन्म हो करके जितनी भी तुम्हारी यह ज्ञान निधि है यह तुम्हारे समक्ष न रहेगी, वह समाप्त हो जाएगी, शरीर में अज्ञानता छा जाएगी। आकृति बहुत ही तुच्छ बन जाएगी परन्तु एक महान् अवस्था आ करके जिसको हमारे योगियों ने देखो, समाधि अवस्था कहा है जिसको बहकड़ी

वाणी भी कहते हैं जिसको प्राण अवस्था भी कहते हैं, शरीर की ऐसी गति बन करके उस शरीर से आत्मा का उत्थान हो करके अन्तरिक्ष मण्डल मे ं जहाँ सूक्ष्म शरीर वाली महान् आत्माओं के सत्संग के द्वारा उस शरीर द्वारा तुम्हारी आकाशवाणी मृत–मण्डल में पहु ँचेगी। वह काल इतना तुच्छ होगा कि उस काल में कोई तुम्हें तुच्छ कहेगा कोई पाखण्डी कहेगा, कोई किसी प्रकार से पुकारेगा, तुम्हें यह कर्म भोगना पड़ेगा।

तो आज मुनिवरो! तुम्हें प्रतीत हो गया होगा कि आज वह काल है जिस काल में हम लाखों वर्ष पूर्व किए हुए कर्मों को भोग रहे हैं। तुम्हें ज्ञात हो गया होगा कि वह हमारा किया हुआ कर्म है जो एक ऋषि बालक को दण्ड देकर मृत्यु को प्राप्त कराके आज हम इस अवस्था को पा रहे हैं।

आत्मा शाप नहीं देती। गुरु ब्रह्मा ने शाप दिया तो गुरु ब्रह्मा भी महान् पाप के भागी बन गए। उसका उत्तर यह है कि मानव का शाप क्या है? वह तो कर्मों का वशीभूत होना है और कर्मों में बन्धना है किसी प्रकार भी बन्ध जाओ। ऐसा वेदों का वाक्य है, ऐसा हमारे आचार्यों ने कहा है। शाप वह देता है जिसकी महान् आत्मा होती है परन्तु वह देता किसको है? वह उसके अन्तःकरण को जान लेता है। किसी अज्ञानी को शाप देता है तो उस ज्ञानी का आत्मिक बल सूक्ष्म बन जाता है। जो ज्ञानी सब कुछ जानता हुआ जिस कार्य को कर देता है उसको अच्छी प्रकार दण्ड देना चाहिए। उसमें कोई हानि नहीं होती क्योंकि वह तो दण्ड देना है। हमारे गुरु जी ने हमें दण्ड दिया।

उस समय गुरुजी ने यह भी कहा था कि उस काल में तुम्हें गुरु भी प्राप्त न होगा। उस समय गुरु से निवेदन किया और कहा, भगवन्! हमारा कल्याण कैसे होगा? जब हम अपने सूर्य–मण्डलो ं को त्यागकर मृत–मण्डल में जन्म पाएंगे और जन्म धारण करके हमें महान् कोई योगाभ्यासी अमृती गुरु प्राप्त न होगा तो जीवन कैसे बनेगा। तो उस समय गुरु ने प्रसन्न होकर कहा, ''जाओ! जब तुम्हारे उस शरीर की पचास वर्ष की अवस्था हो जाएगी उस समय तुम्हें कोई ब्राह्मणी आत्मा प्राप्त हो जाएगी।'' कई समय से तुम्हारा प्रश्न चल रहा था। आज तुम्हें उसका उत्तर मिल गया। आज हम लाखों वर्ष पूर्व किए हुए कर्मों को भोग रहे हैं और भोगते रहे ंगे जब तक अवधि है। यह है आज का हमारा व्याख्यान। आज के व्याख्यानो ं का अभिप्राय है कि मानव को शुभ कार्य करने चाहिए जिससे मानव ऊँचा बने और मानव का विकास हो मुनिवरो! देखो, क्या करें हमने तो विचार भी बहुत परन्तु गुरु का अपमान न सह सके वह उल्टा ही पड़ गया, हमें भोगना पड़ गया। समय की प्रबलता, मानव पर जब समय कठिन आता है तो शुभ कार्य भी अशुभ बन जाता है, उसकी रूपरेखा ही अशुभ बन जाती है। क्या करें संसार की गति को। गुरु का अपमान, कि गुरु को जीत लिया, हम सह न सके और उसको मृत्यु दण्ड दे दिया। उसकी उल्टी रूपरेखा बन करके लाखों वर्षों का किया हुआ कर्म आज भोगा जा रहा है। यह परमात्मा की कैसी विचित्रता है जिसमें ऐसे–ऐसे कर्मों के फल भी मानव को भोगने पड़ते हैं। महानन्द जी, जैसा तुमने कहा हमें किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं कि मृत–मण्डल मे ं कोई पाखण्डी उच्चारण कर रहा, कोई कुछ कह रहा है, हमें तो कोई भोगना ही पड़ेगा। उसके अनुकूल परमात्मा से याचना करना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे यह व्याख्यान चलते हैं और चलते रहेंगे। परमात्मा की निधि है। आज हम इसको विचारते रहें और इस निधि का इसी प्रकार प्रसार करते रहें जब तक परमात्मा ने, हमारे गुरु ने अवधि दी है। अब हमारा यह आदेश समाप्त हो गया है कल अवसर मिलेगा तो कल दार्शनिक विषय पर व्याख्यान देंगे।

(महानन्द) धन्य हो भगवन्!

तो मुनिवरो! अब हमारा वेद–पाठ प्रारम्भ होगा इसके पश्चात् हमारी वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। (वेद पाठ)